9

धर्म ने आपके लिए क्या किया है?

(2 कुरिन्थियों 6:4-10; 11:16-33)

''क्या वे ही मसीह के सेवक हैं? ...
मैं उन से बढ़कर हूं; ...'' (11:23)।

अमेरिकी धार्मिक अनुभव को ''कैफेटेरिया स्टाइल'' धर्म का नाम दिया गया है। अन्य कई धर्मों के विपरीत जहां धार्मिक अभव्यक्ति का एक प्रमुख रूप होता है हमें विश्वास के असीमित मूल ढंगों का सामना करना पड़ता है। इतनी सारी ''प्रस्तुतियां'' होने का परिणाम यह है कि हम ग्राहक बन जाते हैं जो बढिया से बढिया सौदे की तलाश में हों। अच्छे ग्राहकों की तरह हम सेवकाई का ऐसा रूप ढूंढ़ने के लिए जो हमें पसन्द हो खरीदारी करते घूमते हैं। हम मीडिया और साहित्य के विभिन्न किस्मों के द्वारा किए जाने वाले दावों को सुनते और फिर अपनी पसन्द बनाते हैं। यदि हम संतुष्ट न हुए तो हम दान बदल सकते हैं!

हर उत्पाद से हमें यह पूछना सिखाया गया है कि ''मुझे इससे क्या लाभ होगा?'' ''क्या इसकी कीमत पूरी हो जाएगी?'' आज ऐसे ही सवाल लोगों और कलीसियाओं द्वारा पूछे जा रहे हैं। इन सवालों ने कई कलीसियाओं और सेवकाइयों को अपने चंदे पर गर्व करने की स्थिति में ला दिया है। एक कलीसिया उनके लिए जो अच्छी कमाई की तलाश में हैं कुछ पेशकश करती है एक और अरामदायक स्थान की पेशकश करती है जहां ''मन की शांति'' खरीदी जा सकती है। एक और आत्मिक शक्ति के चिह्नों को देखते रहने की पेशकश करती है। कलीसिया के अगुवे ऐसा धर्म देने की पेशकश करने के लिए जो इस प्रतियोगियों से अधिक आकर्षित हो मार्किट सर्वे करवाते हैं।

यह देखने के लिए कि हमें ''इसमें से क्या'' मिलेगा, अपने विश्वास को इस तरह करना गलत है? नया नियम कई बार बताता है कि हमें विश्वास से क्या मिलता है। यह वास्तव में मन की शांति, आशा, अपनेपन का स्थान और आत्मिक सामर्थ की पेशकश भी करता है। परन्तु यह देखने के लिए कि हर कोई क्या दे रहा है ''खरीदारी करना'' खतरनाक है। कुरिन्थियों के साथ पौलुस का अनुभव हमें सेवकाई के लिए ''ग्राहक'' वाले ढंग के खतरों का स्मरण कराता है।

मूर्खों का खेल (11:16-22)

कुरिन्थी मसीही वे ग्राहक थे जो धर्म की दो किस्मों में से एक को चुनने पर विवश थे। ''बड़े से बड़े प्रेरित'' (11:5) और पौलुस ने मसीही सेवकाई के बहुत अलग-अलग संस्करण दिए थे। ''बड़े से बड़े प्रेरितों'' द्वारा पौलुस की आलोचना से देखते हुए हम यह मान सकते हैं कि उनकी सेवकाई कुछ शानदार बातें देती थी (तुलना 10:10)। वे प्रभावशाली बोलने वाले थे

जिन्होंने अपने जीवनों में परमेश्वर की सामर्थ को स्पष्ट दिखाया था। उनकी सेवकाई स्पष्टतया उनकी बड़ी प्राप्तियों पर शेखी से भरी हुई थी। वास्तव में अध्याय 10 से 13 की चौंकाने वाली बात ''घमण्ड'' शब्द के रूपों की बारम्बरता है। यह शब्द संज्ञा या क्रिया रूपों में इन अध्यायों में उन्नीस बार आता है। ''बड़े से बड़े प्रेरित'' बड़ी आत्मिक सामर्थ वाले के रूप में अपने ऊपर घमण्ड करते थे ((तुलना 11:18, 22))। उनका यह घमण्ड पौलुस के लिए रक्षात्मक बन गया।

''बड़े से बड़े प्रेरित'' सम्भवतया ''प्रभु के दिए हुए दर्शनों और प्रकाशनों'' पर घमण्ड करते होंगे (12:1), जिन्हें वे अपनी आत्मिक सामर्थ के चिह्नों के रूप में देते थे। वे पौलुस की आलोचना एक कमज़ोर व्यक्ति कह कर करते हैं जो नगर-नगर घूमता, सताव और मज़ाक का कारण है। वह जहां भी जाता, उसे नई पराजय का सामना करना पड़ा, क्योंकि उसे बार-बार गिरफ्तार किया जाता, पीटा जाता और नगर से भगा दिया जाता। इस दृष्टिकोण से पौलुस एक महत्वपूर्ण कार्य के लिए अयोग्य है (तुलना 2:16)। उसने अपने पीछे निर्बलता और नाकामी का एक रिकार्ड छोड़ दिया है।

हम ऐसे आरोपों का उत्तर कैसे देते हैं? हमें लग सकता है कि इसका बढ़िया उत्तर अपनी सेवकाई के अलोचकों की ओर ध्यान न देकर दिया जा सकता है। परन्तु पौलुस अपने आलोचकों की अनदेखी नहीं करता। हम खुश हो सकते हैं कि पौलुस ने उन्हें अनदेखा न करने का निर्णय लिया, क्योंकि उन्हें इन आरोपों के लिए उसका उत्तर मसीही की ''पहचान'' में नये नियम की सबसे स्पष्ट समझ देता है। पौलुस अपने बचाव के लिए अपने आलोचकों के घमण्ड से मिलाने का निर्णय लेता है। 6:4 में वह उन चिह्नों की सूची देता है जिन से वह अपने संदेह करने वालों की ''सराहना करता'' है। 11:16-18 में वह कहता है कि अब वह अपने ऊपर घमण्ड करेगा। 11:22-33 में वह एक बार फिर अपनी सेवकाई की पहचान के चिह्न देने के लिए आगे बढ़ता है।

बेशक मसीह के सेवकों के रूप में अपनी पहचान के चिह्नों पर घमण्ड करना अच्छा नहीं है। 2 कुरिन्थियों के बाहर शायद ही पौलुस ऐसी व्यक्तिगत सफ़ाई देता हो। वास्तव में ऐसे मामलों पर चर्चा करना स्पष्ट रूप में खामोश है। वह इस बातचीत को ''मूर्खता'' कहता है और निष्कर्ष निकालता है कि वह मूर्खों का खेल-खेल रहा है। वह कहता है, ''यदि तुम मेरी थोड़ी मूर्खता सह लेते तो क्या ही भला होता'' (11:1)। वह यह भी कहता है, ''इस बेधड़क घमण्ड से बोलने में जो कुछ मैं करता हूं वह प्रभु की आज्ञा के अनुसार नहीं पर मानों मूर्खता से ही कहता हूं'' (11:17)। इसलिए सामान्य परिस्थितियों में अपनी प्राप्तियों में घमण्ड करना पूरी तरह से असंगत है। पौलुस के शब्दों में, ऐसा घमण्ड मूर्खों के लिए है!

तो फिर घमण्ड के लिए अपनी घृणा के बावजूद पौलुस ने अपने आपको घमण्ड करने में शामिल करने का निर्णय क्यों किया? ''घमण्ड करना तो मेरे लिए ठीक नहीं तौभी करना पड़ता है; ...'' वह कहता है (12:11)। कुरिन्थी मसीहियों में कालांतर में मूर्खों की बातों पर ध्यान दिया था। वह किसी बहस में जीतने के लिए नहीं बल्कि उसने इसलिए घमण्ड किया क्योंकि कुरिन्थी लोग उलझन में थे और आसानी से गुमराह हो गए थे। व्यंग्य करते हुए वह कहता है, ''क्योंकि तुम्हें कोई दास बना लेता है, या खा जाता है, या फसा लेता है, या अपने आप को बड़ा बनाता है, या तुम्हारे मुंह पर थप्पड़ मारता है, तो तुम सह लेते हो'' (11:20)। यदि वे अधिक परिपक्व थे और मसीह के सच्चे सेवक में अन्तर करने के योग्य थे, तो उसके घमण्ड करने की

आवश्यकता न होती। यदि सेवकाई के लिए अपने ढ़ग में वे इतने उलझन में नहीं होते तो पौलुस को घमण्ड करने की आवश्यकता न पड़ती। इस कलीसिया ने दिखा दिया था कि यह ''मूर्खों को आनन्द से सहन'' कर लेगी।

कुरिन्थियों के साथ पौलुस की बातचीत समकालीन कलीसिया के जीवन के लिए कुछ महत्वपूर्ण सवाल खड़े करती है। यदि हम ''कैफेटेरिया स्टाइल'' वाले धर्म में ग्राहक हैं, तो हम ऐसी स्थिति में भी पड़ सकते हैं जैसी स्थिति में कुरिन्थुस के लोग पड़े थे। हमें सेवकाई के अलग-अलग और आपस में उलझती किसमें बताई जाएंगे जिन में से हम चुन सकें और हम हर किसी के एक दूसरे के साथ उलझते ''घमण्डों'' को सुनेंगे। जो सवाल हमारे सामने होगा वह यह है कि हम किसे ''सहन करते'' हैं? पौलुस ने मूर्ख की भूमिका निभाई थी क्योंकि कुरिन्थी लोग विशेषकर मूर्खों से आकर्षित हुए थे! कलीसिया के लिए आज महत्वपूर्ण चुनौती सही सेवकाइयों को जानना और पहचानना है और केवल ग्राहक बनने से इनकार करना है। यह सम्भव है कि कुरिन्थियों की तरह हम भी गलत किसम के दावों से प्रभावित हो जाएं। हम उन सेवकाइयों आकर्षित हो सकते हैं जो फायदा अधिक दे और बलिदान कम मांगे या असाधारण और आकर्षित करने वाली हो। परिपक्व कलीसिया उनके लिए अभेद्य नहीं बनेगी जो केवल अपने अद्‌भुत परिणामों पर घमण्ड करते हैं।

कुरिन्थियों के साथ पौलुस की बातचीत से और सवाल खड़े होते हैं। घमण्ड करना उपयुक्त कार्य होता है और हमारे घमण्ड करने के योग्य क्या बात है? किस प्रकार का घमण्ड असंगत है, क्योंकि यह प्रभाव छोड़ता है कि प्राप्तियां हम ने ही की हैं। उदाहरण के लिए आंकड़े और रिकॉर्ड रखना उपयुक्त है। पर आंकडों का आकर्षण गलत कारण के लिए हो सकता है। यदि हम ''अंकों को'' केवल अपनी ही कलीसिया की श्रेष्ठता को साबित करने के लिए रखते हैं तो हमारा घमण्ड करना सही नहीं है।

हमारा घमण्ड करना किस काम का है? पौलुस 11:23-33 और 6:4-10 में एक उत्तर देता है। हर मण्डली पौलुस की उन बातों की सूची से जिन पर वह घमण्ड करना चाहता था लाभ उठा सकती है। हमारे अपने दावों के साथ घमण्ड की जाने वाली उसकी बातों से तुलना करना उपयोगी होगा।

''क्या वे इब्रानी है? मैं भी हूं'' (11:22)

पौलुस अपने आलोचकों के घमण्डों से मिलाते हुए अपना उत्तर देना आरम्भ करता है। ''क्या वे ही इब्राहीम के वंश में हैं? मैं भी हूं: क्या वे ही मसीह के सेवक हैं?'' हमें यह पक्का पता नहीं है कि ''इब्रानी,'' ''इस्राएली'' और ''अब्राहम के वंश'' के शब्दों में क्या अन्तर किया जा रहा है। हम केवल इतना जानते हैं कि दोनों पक्ष विशुद्ध यहूदी विरासत का घमण्ड करते थे। जैसा कि पौलुस फिलिप्पियों में कहता है, शरीर पर भरोसा रखने का उसका कारण था (फिलिप्पियों 3:4)। विरासत के प्रश्नों पर वह किसी से भी मिला सकता था, यानी घमण्ड पर घमण्ड कर सकता था।

पहले तो लगता है कि पौलुस ने उन्हीं बातों पर घमण्ड करना चुना जिन पर उसके आलोचक घमण्ड करते हैं। यहूदी के रूप में उसकी विरासत उनके समान ही है। परन्तु पौलुस विषय को

लटका देता है! 11:23–33 में वह यह प्रमाण दिखाने के लिए कि वह ''मसीह का सेवक'' है विषय को बदल देता है (11:23)। स्पष्टतया पौलुस उनके घमण्डों को विरासत के आधार पर मिला सकता था, परन्तु वह ऐसा न करना चुनता है (जैसे कि 12:1–10 में है)। ये सभी लाभ ''मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण'' अब हानि लगते हैं (फिलिप्पियों 3:8)।

कई बार हम ऐसी चीज़ों पर घमण्ड करते हैं जो तुलनात्मक रूप में इतनी बढ़िया नहीं होती। हम उस महत्वपूर्ण भूमिका की बात कर सकते हैं जो हमारे परिवार ने सदा से माना है, अपनी मण्डली के शानदार इतिहास, या उन प्राप्तियों की जो हम ने पाई हैं। घमण्ड करने लायक इनमें कोई बात नहीं है। पौलुस इस बात को समझता है कि वह ऐसे तुच्छ घमण्डों की तुलना कर सकता है, पर इसका कोई लाभ नहीं।

मसीही की पहचान (11:23-33; 6:4-10)

2 कुरिन्थियों में दो अलग–अलग हवालों में पौलुस अपने ही जीवन के वे तथ्य बताता है जिनसे पता चलता है वह मसीह का सच्चा सेवक है। ''परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों की नाईं ...'' (6:4)। ''क्या वे ही मसीह के सेवक हैं? मैं उन से बढ़कर हूं! ...'' (11:23)। पौलुस यानी वह व्यक्ति जिस पर अप्रभावि या निर्बल होने का आरोप लगाया गया, अब अपना ही बचाव करता है। परन्तु लोगों को हैरानी होती है कि वह उन्हीं बातों पर घमण्ड करता है जिनके लिए उसकी आलोचना होती है। वह जो कलीसिया का लाभ लेने के लिए ''अति निर्बल'' था (11:21) अब उसी बात पर घमण्ड करता है जो उसकी कमज़ोरी को दिखाती है (11:29, 30)। वास्तव में 10 से 13 अध्यायों का मुख्य शब्द ''निर्बलता'' है क्योंकि निर्बलता ही मसीही की पहचान है (तुलना 10:10; 12:5, 9, 10; 13:4, 9)। मसीही वह है जिसके पास अपनी कोई सामर्थ नहीं है।

पौलुस के पास अपनी निर्बलता को दिखाने के लिए अपने जीवन की घटनाओं की सूची है। हमें प्रेरितों के काम या पौलुस के अन्य पत्रों से कुछ ही घटनाओं का पता है क्योंकि उसने उन घटनाओं को तभी स्मरण किया जब उसकी सेवकाई की वैद्यता पर सवाल उठा। ये सूचियां एक बेचारे व्यक्ति का प्रभाव बताती हैं जो एक से एक परेशानी भरे पल में से गुज़रा।

यह देखना प्रभावशाली है जहां पौलुस सुझाव देता है कि उसने मसीही जीवन में श्रेष्ठता पा ली है। 11:23 में वह ''बढ़कर'' और ''अधिक'' (दोनों बार *perissoteros*) जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया। ''बार–बार'' (*hyperballontos*; NEV, ''उससे भी अधिक'') और ''कई बार'' जैसे शब्दों के साथ दोहराता है। यानी अपने जीवन के एक क्षेत्र में उसका कोई सानी नहीं था! यह कठिन काम (तुलना 6:5; 1 थिस्सलुनीकियों 2:9), कई बार जेल जाना (तुलना 6:5; प्रेरितों 16:23), मार खाना (तुलना 6:5) और ऐसे समय थे जब वह मरने के निकट था (तुलना 1:8–11)। इन क्षणों में वह बहुत बेचारा और लाचार लगता था। एक लाचार व्यक्ति के लिए जिसे पीटा गया और मरने के लिए छोड़ दिया गया था परमेश्वर के समर्थन का कोई आश्चर्यकर्म से चिह्न नहीं मिला। ऐसी अप्रिय घटनाओं में किसी ने परमेश्वर की सामर्थ के चिह्न नहीं देखने थे।

पौलुस के असहायपन की बात पढ़कर यानी उन असाधारण घावों को जो उसने सहे और

जीवन के कष्टदायक पलों को पढ़कर हम चकित होते हैं। सूची को पढ़ने का प्रभाव यह ध्यान देना है कि पौलुस की सेवकाई से उसे स्वास्थ्य और धन मन की शांति मिलने के बजाय पीड़ा ही मिली। शारीरिक पीड़ा के उसके चरम पलों का विवरण 11:24, 25 में है। पारम्परिक यहूदी ''उन्नतालिस कोड़े'' जो पौलुस को पांच बार मिले थे, पीड़ादायक और लज्जाजनक थे। छड़ियों से पीटाई करना (प्रेरितों 16:37; 22:25, 29) रोमी दण्ड था जबकि पथराव करना (तुलना प्रेरितों 14:19) अदालत का आश्रय लेने वाली भीड़ द्वारा किया जाता था। पौलुस जहां भी गया उसने लोगों में एक ऐसी हलचल मचा दी जिस कारण अधिकारियों और क्रूद्ध भीड़ द्वारा उसे अपमानजनक पीटाई की गई। गलातियों 6:17 के सुझाव के अनुसार, पौलुस अपने शरीर पर युद्ध के चिह्न ''यीशु के दागों'' को लिए फिरता था।

समुद्र के जोखिमों और भीड़ के वास्तविक खतरों के अलावा और परेशानी के लगातार खतरे थे। 11:26 में ''जोखिमों'' शब्द भौतिक संकटों की विभिन्नता को दिखाने के लिए कई बार दोहराया गया है। यह खतरे सफ़र के साथ उस युग में थे जब यात्रियों को प्रकृति (''नदियों से खतरों'') और घूम रहे डाकुओं से खतरे का सामना करना पड़ता था। यह खतरा वास्तविक परेशानी जैसा ही हो सकता है।

कठिनाइयां पक्का वेतन न होने, अयोग्यता या बेरोजगारी के लाभों के न होने से भी आई होंगी। अपने व्यवसाय को पीछे छोड़कर और हमेशा कभी कबार दूसरों से मिलने वाले उपहारों पर निर्भर रहकर पौलुस भूख और प्यास, जाड़े और उगाड़े रहने का सामना किया (11:27)। उसने स्वेच्छा से असाधारण असुरक्षाओं को स्वीकार किया क्योंकि उसे भरोसा था कि परमेश्वर उपाय करेगा। सेवकाई ने परमेश्वर के हाथ में अपना जीवन देने के लिए जीवन के स्तर को बलिदान करने का निर्णय भी शामिल था। उसने ''किसी भी और हर परिस्थिति में'' ''हर एक बात और सब दिशाओं में मैं ने तृप्त होना, भूख रहना, और बढ़ने'' का भेद सीखा था (फिलिप्पियों 4:12)। पहले 2 कुरिन्थियों में उसने कहा था, ''शोक करने वाले के समान हैं, परन्तु सर्वदा आनन्द करते हैं; कंगालों के ऐसे हैं, परन्तु बहुतों को धनवान बना देते हैं'' (6:10)! सेवकाई में व्यक्तिगत आर्थिक सुरक्षा तथा सम्पत्ति के जोखिम थे जिन्हें नापा नहीं जा सकता था।

पौलुस की शारीरिक स्थिति ग्राहक प्रधान जनता के लिए विज्ञापन नहीं था। उसके जैसी मसीहियत ने उसे बहुत परेशानी में डाल दिया था। सबसे अधिक लाभ देने वालों के लिए खरीदारी करने वाला कोई व्यक्ति मसीहियत के इस रूप से आकर्षित नहीं हुआ होगा।

सब कलीसियाओं के लिए चिंता (11:28)

पौलुस की सेवकाई में पीटाइयों और उग्र भीड़ में से कहीं बढ़कर था। एक और पीड़ा इससे भी भयंकर हो सकती है: ''अन्य बातों को छोड़कर जिन का वर्णन में नहीं करता सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है'' (11:28)। प्रामाणिक सेवकाई में समस्याओं को दफतर में नहीं छोड़ा जा सकता। पौलुस ने यह दावा नहीं किया कि उसकी सेवकाई से उसे मन की शांति मिल गई है। उसके लिए ''प्रतिदिन दबाव'' (*epistasis*)। इस शब्द का अर्थ ''निगरानी का बोझ'' भी हो सकता है। सेवकाई में रात भर जागना शामिल था (तुलना 11:27; 6:5 में ''जागते रहने'')। कोई भी जो मसीही सेवा में लगा हुआ है सुसमाचार का प्रचार करके

कलीसिया की स्थापना में सहायता करके यूं ही छोड़कर नहीं जा सकता!

पौलुस की ''सब कलीसियाओं की चिंता'' इस तथ्य को दिखाती है कि उसके मिशनरी परिश्रमों का परिणाम पूरे भूमध्य जगत में कलीसियाओं का बनना था। उसके पत्र और उसका लौटकर वहां आना याद दिलाता है कि वह उनके जीवनों में छाया रहा था। उसे एक विभाजिक कलीसिया पर दुख हुआ। उनमें से कुछ के सुसमाचार को छोड़ देने पर उसने घोर निराशा व्यक्त की (गलातियों 1:6)। उसने जहां तक हो सके संप्रेषण बनाए रखा। वह कलीसियाओं के सामने बार-बार आने वाली समस्याओं से झुझने को तैयार रहता था। पौलुस ने व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदारी महसूस की, नई कलीसिया के जन्म के समय केवल वहां होने के लिए नहीं। वह दुल्हन के चिंतित पिता के तरह था जो यह सुनिश्चित करना चाहता है कि उसकी बेटी सुरक्षित और सम्भाली रहे (11:2)। वह उस चिंतित माता पिता की तरह था जो अपने बच्चों की निगरानी करता है (12:14)। इस स्थिति में कोई भी उसकी ''सब कलीसियाओं की चिंता'' से भाग नहीं सकता।

जो लोग मसीही विश्वास को केवल ग्राहकों के रूप में देखते हैं वे मसीहियत के साथ आरम्भ महसूस नहीं करेंगे जिसमें ''सब कलीसियाओं की चिंता'' शामिल है। हम एक ऐसा धर्म चाहते हैं जो हमारी चिंता को हर ले, न कि वह जो हमें चिंता दे! हम ऐसा मसीही जीवन चाहते हैं जो शांति और स्थिरता दे, ऐसा नहीं जो हमारी रातों की नींदे उड़ा दे। हम आम तौर पर अपने घर की मण्डली को चुनते हैं क्योंकि इसमें समस्याओं से छुटकारा मिलने की सम्भावना है। परन्तु पौलुस को मालूम था कि हम समस्याओं से बच नहीं सकते जो हमें गहरी चिंता देती है। 11:28 में पौलुस की बात यह सुझाव देती है कि सच्चे मसीही की एक पहचान कलीसिया की समस्याओं पर यह चिंता है।

हम में से अधिकतर के लिए अपने आपको कलीसिया के जीवन में शामिल करने पर ''विजय को चुनने'' की इच्छा करना स्वाभाविक ही है। कई एक से दूसरी कलीसिया में उस कलीसिया की समस्याओं से बचने के लिए और ऐसी कलीसिया को चुनने की उम्मीद से जाते हैं जिसमें कोई समस्या न हो। जिन मण्डलियों को मैं जानता हूं उन में, दूसरे लोगों में आंतरिक मतभेद से टूट रही कलीसिया के साथ बने रहने और संघर्ष करने को चुना। अन्य ऐसी कलीसियाओं को समर्पित रहे जो कम होते पड़ोसियों के दुखों को सहती प्रतीत हुई। कुछ मसीही लोग परेशान समुदायों की समस्याओं से पीछा छुड़ाने की बजाय ''सब कलीसियाओं की चिंता'' करना चुनते हैं।

अपमानजनक पल (11:32, 33)

पौलुस के जीवन में एक अपमानजनक पल खड़ा हो गया। यह दमिश्क में वह समय था जब पौलुस दीवार की खिड़की में से टोकरी में बिठाकर नगर के पहरेदारों से बचाया गया। यह याद रखा गया क्योंकि पौलुस टोकरी में ले जाए जाकर हंसी का पात्र बन गया था। किसी बड़े व्यक्ति के टोकरी में बचाए जाने की बात देखने वालों को हास्यस्पद लगी होगी। बच जाने वाले मसीही लोगों को ''बड़े स्टाइल'' की बात करते जिसमें उनका अगुआ नगर छोड़ गया था, शर्म आती होगी! पौलुस के विरोधी एक निर्बल व्यक्ति के रूप में पौलुस का उदाहरण देने के लिए

जो कलीसिया के लिए परेशानी था, इसी पल की ओर ध्यान दिला सकते थे।

प्राचीन संसार में बहादुर व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा सैनिक पुरस्कार शत्रु के सामने दीवार पर सबसे पहले आने वाले व्यक्ति को दिया जाता था। पौलुस अपने आपको इसके बिल्कुल विपरीत दिखाता है: वह दीवार के नीचे सबसे पहला था। उसने भीड़ को प्रभावित करने के लिए कोई शक्ति प्रदर्शन या ज़बर्दस्त भाषण नहीं दिया था। पौलुस ने अपने जीवन की दीनता के मुकुट का घमण्ड करने का साहस किया, ऐसी घटना जो सम्भवतया उसे अपमानित करने की प्रतीक्षा में थी उसके शत्रु ने बतानी थी। निश्चय ही उन्हें लगा कि जो अपमानित और प्रताड़ित थे वह अपनी सेवकाई में परमेश्वर की सामर्थ को नहीं दिखा सकता।

पौलुस ने अपनी सेवकाई की इस पूरी सफ़ाई का आरम्भ (11:16-33) ''मूर्ख बनकर'' और अपने आलोचकों को घमण्ड का जवाब घमण्ड से दिया (11:16-22)। हम यह मान सकते हैं कि उनके पास विजयों की अपनी सूची थी परन्तु 11:23-33 में पौलुस अपनी प्राप्तियों के साथ उनके घमण्ड करने को मिलाना अस्वाभाविक मानता है। इसके बजाय वह कठिन समयों और असफलताओं की बात बताता है। निर्बलता जिसके लिए उसका उपहास किया जाता है पर ही वह घमण्ड करता है। वह पूछता है, ''किस की निर्बलता से मैं निर्बल नहीं होता?'' ''यदि घमण्ड करना आवश्यक है तो मैं अपनी निर्बलता की बातों पर घमण्ड करूंगा'' (11:29, 30)। पौलुस ने अपनी सेवकाई के सफ़ाई के लिए सफलता के संसार के मानक का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया। उसकी सेवकाई की विशेषता कठिन कार्य, रातों में न सोना और अपनी सामर्थ से बढ़कर चुनौतियां थीं।

उसका उत्तर उस समय प्रसिद्ध नहीं था और न ही यह आज प्रसिद्ध है। हमारे पास अपनी सेवकाइयों के सही होने की पेशकश के लिए और सूचियां हैं। हम अपने शपत रिज़्यूम में और वार्षिक रिर्पोटों में अपनी कमज़ोरियों को कभी नहीं दिखाते। ऐसी मण्डली की कल्पना करें जो सेवक के रिकॉर्ड पर प्राप्तियों की पौलुस की सूची को समर्थन देने हुए देखें। कार्पोरेशन के नमूने पर बनी कलीसिया सफलता के चिह्नों की मांग करेगी। पौलुस की सूची हमें याद दिलाती है कि कुछ सफल सेवकाइयां कभी ध्यान में नहीं आई हैं। यह सम्भव है कि कुछ ''सेवकाइयां'' पौलुस के मानकों से सफल न हों।

निर्बलता में सामर्थ

जब हम उन मानसिक और भौतिक तापनों को जो पौलुस ने अपने जीवन में लिए समझ लेते हैं तो हम चकित होते हैं कि यह भंजनशील ''मिट्टी का बर्तन'' जीवित कैसे रहा। अपर्याप्त चिकित्सीय सम्भाल, धूप, उघाड़े जाना, भूख पेट रहना और खतरनाक परिस्थितियों में सफ़र करते रहना हृष्ट पुष्ठ धावक को हार मनाने के लिए काफ़ी था। ''बार-बार'' वह मरने वाला था, अवश्य कुछ अयोग्यताएं नहीं तो दाग तो अवश्य छोड़ गया होगा। ''निर्बलताओं'' की सूची इस कारण हमें पौलुस की सहने की असाधारण सामर्थ से चकित करती है। शारीरिक और भावनात्मक थकावट के कई ऐसे अवसर आए जब पौलुस की सामर्थ ने जवाब दे दिया। परन्तु उसे सामर्थ का हमेशा एक भण्डार मिला जो परमेश्वर की ओर से था। अपनी सामर्थ को उण्डेलते पर उसे और सामर्थ दी जा रही थी।

सारांश

अपनी सेवकाइयों में बनी रहने वाली सामर्थ की कमी का मुख्य कारण शायद यह है कि ''कैफेटेरिया स्टाइल'' धर्म हमेशा उन्हीं लोगों को देखता है जो सौदेबाजी करके हमारे मण्डली को क्रांतिकारी बनाने का दावा करते हैं। कुरिन्थियों की तरह हम अरामदायक जीवन शैली के बड़े जोखिम लिए बिना अपनी प्राप्तियों के नम्बरों का हिसाब रखना चाहते हैं। पौलुस ऐसी भिन्न शैली की पेशकश नहीं करता जो आरामदायक है। प्रमाणिक सेवकाई की सामर्थ अति सृजनात्मक कार्यकर्मों से नहीं बल्कि मसीह के काम की खातिर अपने आपको दे देने से आती है। ''जब हम कमज़ोर होते हैं, तभी हम मज़बूत होते हैं।'' मसीही की पहचान वह कमज़ोरी है जो परमेश्वर की सामर्थ पाने को तैयार है।